राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

खण्ड 9] चतुर्थ विधान सभा के नवम् सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 1

सोमवार, दिनांक 2 नवम्बर, 1970

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.25 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री निरंजननाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

शोक-उद्‌गार

श्री अध्यक्ष : स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंह, भूतपूर्व राजप्रमुख, राजस्थान एवं स्वर्गीय प्रेसीडेन्ट नासर के निधन पर शोक उद्‌गार।

सदन के नेता महोदय।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मन्त्री): अध्यक्ष महोदय, तारीख 24-6-70 को सारे विश्व को एक अत्यन्त ही खेदजनक और सबको शोकाकुल कर देने वाले समाचार सुनने को मिले और वह थे स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंहजी के पोलो मैदान पर ही देहावसान हो जाने के। हम में से बहुतसों को स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंहजी के निकट सम्पर्क में आने का और उनके साथ काम करने का मौका मिला है।

वे 11 वर्ष की अल्पायु में ही जयपुर रियासत के महाराजा के पद पर आसीन हुए और उसके बाद 1931 में उनको शासन के पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए। उसके बाद लगातार जब जयपुर रियासत का एकीकरण हुआ तब तक इस पद पर काम करते हुए जयपुर रियासत के सर्वाङ्गीण विकास के लिये, जयपुर को सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिये, जयपुर में सन् 1945 में एक चुनी हुई विधान सभा बनायी गयी जिसका काम इसी सदन में जहां कि हम बैठे हुए हैं, प्रारम्भ किया गया था। उस समय जो विचार परिवर्तन देश के अन्दर होते आ रहे थे, उन्होंने उनकी दिशा में वृद्धि दी और व्यवहारिकता के लिहाज से वे सजग रहे और समय समय पर उन्होंने उनके अनुरूप कदम उठाये। जयपुर रियासत में विधान सभा और कौंसिल थी, उनके बहुमत ने जब उत्तरदायी शासन की मांग की तो उन्होंने पापुलर मिनिस्ट्री की शुरुआत यहां पर की। उसके बाद श्री वी. टी. कृष्णमाचारी के वक्त में भी यहां पर बहुत से सुधार किये गये।

राजस्थान के बनने के बाद वे राजस्थान के राजप्रमुख के तौर पर 1956 तक काम करते रहे और 1951 से 1956 तक मुझे

Page No 2

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

भी उनके साथ निकट से काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं निश्चय ही इस बात को कह सकता हूं कि राजप्रमुख के तौर पर, स्टेट के एक वैधानिक हैड के तौर पर जो कर्त्तव्य हैं उन कर्त्तव्यों को पूरा करने में हमेशा विधान के संरक्षण और उसके हित में एक कोन्स्टिट्यूशनल राजप्रमुख के तौर पर उन्होंने काम किया और समय-समय उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहा। वे एक बड़े दिल के व्यक्ति थे। खेल में पोलो के मैदान में तो उन्होंने सारी दुनियां में भारत का मस्तिष्क ऊंचा किया ही था लेकिन व्यक्तिगत सम्बन्धों में और सौहार्दपूर्ण तरीके में जो पोलो के खिलाड़ी नहीं भी थे वे भी उनसे प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकते थे और जब चीन और पाकिस्तान का युद्ध हुआ तब भी जो उनको लेफ्टिनेन्ट जनरल का आनरेरी पद प्राप्त था उसके अनुसार फौज में भर्ती के मोर्चे पर जो जवान गये हुये थे उनके उत्साह को बढ़ाने में वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे।

पिछले दिनों में भी मेरी उनसे कई बार बातचीत होती रही और वे उनके मन में देश में जनतंत्र कायम रहे, देश ऊंचा उठे, इन भावनाओं को सदैव मानने वालों में से रहे हैं निश्चय ही उनका हमारे बीच में न रहने से एक बहुत बड़ी क्षति हुई है और मैं परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले, उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, 28-9-70 को सारे विश्व को यह दुखद समाचार सुनने को मिले कि कर्नल नासिर, जिनका जन्म एक मामूली पोस्ट ऑफिस में काम करने वाले क्लर्क के घर में हुआ था और जो इजरायल के खिलाफ युद्ध हुआ था उसमें वे एक सिपाही के तौर पर लड़े थे और लड़ने के बाद भी उनके दिल में मानवता के प्रति सौजन्यपूर्ण वातावरण बना हुआ था। ब्रिटेन और अमेरिका के साम्राज्यवाद के प्रति और अफ्रिका के उपनिवेशवाद के प्रति उनमें संघर्ष करने की उत्कृष्ट भावना थी और इसी वजह से वहां उन्होंने संघर्ष का नेतृत्व किया और वहां के राजा फारूक थे उनको हटाकर वहां की बागडोर फौज ने हाथ में ली थी। वे पंडित जवाहरलाल नेहरू, मार्शल टीटो इन लोगों के अनन्य साथियों में से थे। वे इस बात पर विश्वास करते थे कि विश्व की शान्ति के लिये बिना गुट का नॉन अलाइन्ड देशों का, एक अगर ज्यादा से ज्यादा संगठन बनता है तो उससे विश्व शान्ति स्थापित रह सकती है। हमारे देश के प्रति पंडित जवाहरलाल नेहरू की वजह से और हमारा भी जो नॉन अलाइनमेंट का सिद्धान्त है उन कारणों से उनका काफी निकट का सम्पर्क रहा।

चाईनीज एग्रेशन के वक्त उन्होंने हमारे देश के प्रति जो भावनायें व्यक्त कीं उनसे हम भली प्रकार परिचित हैं। वे भारत के एक अनन्य मित्र थे और उनके निधन से सारे विश्व के अन्दर शान्ति चाहने वाले देशों को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है और अरब जनता का जिसका वे अलग अलग योजनायें बनाकर जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के काम में लगे हुये थे, उनको बहुत बड़ा आघात पहुंचा है अतः उनके निधन पर भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

(विराम)

श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंह जी के आकस्मिक निधन से देश का एक सुप्रसिद्ध नागरिक उठ गया। उनकी असामयिक मृत्यु से मैं समझता हूं मेरी विद्यमानता में ऐसी दुर्घटना मेरे लिये एक दुर्भाग्य और दुःख का कारण है। महाराजा स्वर्गीय मानसिंह जी मेरे बाल्य काल के साथी थे। उनको मैं सन् 1922 से जानता था। वे मेरे साथ पढ़े थे, खेले थे। महाराजा सवाई मानसिंह जी ने 9 वर्ष तक नाबालिग शासक के रूप में जयपुर की गद्दी पर शासन किया, तत्पश्चात् 17 साल तक पूर्ण शासक के रूप से जयपुर का शासन उन्होंने किया। उनके शासन काल में अनुभवी दीवान, अनुभवी मंत्री और कर्मचारी राज्य की सेवा में रहे। महाराजा अमूमन उनके उच्च कर्मचारियों के काम में छोटी बड़ी बात को लेकर दखल नहीं किया करते थे। उनके दीवान, उनके मन्त्री निष्पक्ष, योग्य और अनुभवी थे। महाराजा के प्रशासन में खाद्यान्न के भाव सस्ते और संतुलित थे। न्याय सस्ता था, बेरोजगारी बहुत कम थी और शासन में नियन्त्रण था और शासन सुचारु ढंग से संचालित हुआ करता था। महाराजा सवाई मानसिंह जी एक अन्तर्राष्ट्रीय पोलो के खिलाड़ी थे। वे घोड़े की सवारी और बन्दूक चलाने में निपुण थे। उन्होंने अपने जीवन काल में 150 से अधिक सुनहरे शेरों का शिकार किया था। कई हिरणों का भी उन्होंने शिकार किया था।

उनके शासन काल में वन्य जन्तुओं की बहुतायत थी।

मैं, मेरे दल की ओर से तथा मेरी ओर से लेफ्टिनेन्ट जनरल हिज हाईनेस महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई मानसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई०, के० सी० एस० आई० महाराजा, जयपुर की पवित्र स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये जयपुर के समस्त राज घराने को और खास तौर से महारानी गायत्री देवी के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हुये दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

जनरल कमाल अब्दुल नासिर एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्टेट्समेन थे इजीप्ट के अन्दर उन्हें लोह पुरुष की संज्ञा भी दी जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। शायद ही अरब राष्ट्रों में एक हजार वर्षों में ऐसा कोई व्यक्ति उत्पन्न हुआ हो। उन्होंने अरब राष्ट्रों के एकीकरण में जो अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया था वह चिरस्मरणीय रहेगा। उन्होंने अरब पर सैन्य आक्रमण के समय अद्भुत वीरता का परिचय दिया था वे भारतवर्ष के परम हितैषी और मित्र थे। उन्होंने तथा स्वर्गीय प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा मार्शल टीटो ने तटस्थता का नान अलाइनमेन्ट की थ्योरी का परिपालन किया वह भी चिरस्मरणीय रहेगा। ऐसे महान व्यक्ति के निधन से अरब राष्ट्रों को और संसार को महान क्षति पहुंची है इसके लिये मैं अपने दल की ओर से तथा मेरी ओर से स्वर्गीय प्रेसीडेण्ट नासिर को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल बाजार, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, यह संयोग की बात है कि जिस हाल में बैठकर जिस विधान सभा के अधिवेशन का आयोजन

(श्री भैरों सिंह)

किया जा रहा है इसी हाल के बाता महाराजा मानसिंह जी के प्रति इसी हाल में बैठकर श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

इस हाल का निर्माण सवाई मानसिंह टाउन हाल के नाम पर हुआ था लेकिन इसमें जिस प्रकार की गतिविधियां रही हैं और उन गतिविधियों में महाराजा का जिस प्रकार का योगदान था वह इस बात का बहुत स्पष्ट प्रमाण था कि महाराजा सवाई मानसिंह जी की लोकतन्त्र में बड़ी आस्था थी। उन्होंने अपने शासन काल में रिप्रेजेन्टेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौन्सिल इन दोनों की स्थापना कर इस हाल में इस प्रकार की नींव डाली थी और इसी आधार पर उस लोकतन्त्र के पुष्प के रूप में हम आज विधान सभा की स्थिति में यहां बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय, महाराजा जयपुर एक शासक थे, लेकिन उनका सम्पूर्ण जीवन एक स्पोर्ट्समैन स्पिरिट की तरह रहा है उनके जीवन में स्पोर्ट्समैन स्पिरिट कूट-कूट कर भरी हुई थी। शासन में राजा को कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिये उन्होंने यह सिद्धान्त अपने जीवन में सर्वोपरि रखा था इसी कारण भूतपूर्व जयपुर रियासत में सर वी० टी० कृष्णमाचारी, सर मिर्जा इस्माइल जैसे प्रशासक यहां प्राइम मिनिस्टर के रूप में नियुक्त हुये थे। योग्य प्रशासकों को यहां अवसर देकर इस रियासत की सेवा करने का एक बहुत अच्छा संयोग बिठाया था। महाराजा जयपुर ने अपने जीवन काल में एक शासक के रूप में ही नहीं बल्कि शासक और प्रजा के बीच में जिस प्रकार की एक कल्पना की खाई होती है, उस खाई को पाटने का भरसक प्रयत्न किया यदि यह कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे राजा अवश्य थे लेकिन राजा और प्रजा के बीच में जो एक सामान्य दूरी होनी चाहिये उस दूरी को पाटने का उन्होंने सदैव प्रयत्न किया।

अध्यक्ष महोदय, जयपुर के नागरिक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि वे राजा थे लेकिन राजा की हैसियत से भी शहर की गलियों में और चौराहों पर वे भ्रमण किया करते थे। जब जयपुर रियासत का राजस्थान में विलीनीकरण हुआ वे राजप्रमुख रहे उसके पश्चात् भी उन्होंने जनता से अपने आपको कभी दूर नहीं रखा। राजप्रमुख बन जाने के बाद और एम्बेसेडर और राज्य सभा के सदस्य के रूप में रहते हुए भी उनका जनता से सम्पर्क कभी कम नहीं हुआ। इसी कारण वे जिस लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुंच चुके थे जिनके और आगे बढ़ने का अवसर स्पष्ट दिखाई देता था इस बारे में कहना तो नहीं चाहिये उनकी शवयात्रा में जयपुर और जयपुर रियासत के गांवों से जिस कदर जनता शामिल हुई और जिस प्रकार से लोगों ने उनके प्रति प्रेम प्रदर्शित किया वह स्पष्ट उदाहरण था महाराजा और जनता के बीच में कोई अन्तर नहीं था बल्कि एक रस होकर उन्होंने जयपुर रियासत का शासन किया और विलीनीकरण के बाद भी वे जयपुर की जनता से दूर नहीं हुए।

अध्यक्ष महोदय, यह भी एक संयोग की बात है कि एक शासक हो वह सैनिक भी हो और स्पोर्ट्समैन भी हो। इन तीनों का संयोग हमने महाराजा जयपुर में देखा है।

(श्री भैरोंसिंह)

शासक होकर जो स्पोर्ट्स में रुचि ले। शासन करते हुए स्पोर्ट्स के लिये समय निकाल ले यह कई परिस्थितियों में संभव नहीं। शासन के साथ-साथ जिस प्रकार से इन्होंने स्पोर्ट्स में हिस्सा लिया और संसार में जिस प्रकार पोलो के खेल में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की उससे उन्होंने जयपुर रियासत का ही नहीं, सम्पूर्ण भारत वर्ष का नाम सारे संसार में पोलो के खिलाड़ी के रूप में रोशन करके ख्याति प्राप्त की, वे अपने आपको पोलो के खेल में चैम्पीयन की स्थिति में ले गये।

इसी प्रकार से सैनिक के रूप में भी उन्होंने ख्याति कम नहीं प्राप्त की। यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सेना के अन्दर चाहे वह सैनिक किसी भी रेंक का हो चाहे वह ढाणी का रहने वाला हो या कमाण्डर के रेंक का हो उन सब के साथ महाराजा जयपुर का सम्बन्ध एक सा रहा है। एक छोटे से छोटे सैनिक से लेकर बड़े से बड़े कमाण्डर के साथ उनका हमेशा निकट का सम्पर्क रहा है हिन्दुस्तान का फौजी उस सम्पर्क को नहीं भुला सकता।

अध्यक्ष महोदय, जब कभी उनसे कोई सिपाही मिलने जाता उसके दुःख दर्द को वे बड़ी सहानुभूति के साथ सुनते, बड़े प्रेम के साथ वे उससे पेश आते और जहां तक उनसे बन पड़ता उसके कष्ट को निवारण करने का पूरा प्रयत्न करते। इस प्रकार से उन्होंने सेना में भी अपने जीवन को जिस प्रकार से व्यतीत किया वह सैनिकों के लिये बहुत अच्छे मार्ग दर्शक थे। इसी प्रकार से यह संयोग की बात है कि वे वैसे तो राजा थे जिन राजाओं को आज के समय में कई प्रकार की क्वालिफिकेशन्स से संबोधित किया जाता है लेकिन इस प्रकार के बिरले ही उदाहरण मिलेंगे जिसमें रूस के प्राइम मिनिस्टर, रूस के प्रेसीडेण्ट वहां की पार्टी के जनरल सेक्रेटरी इन तीनों के व्यक्तिगत महमान होकर उन्होंने रूस की यात्रा की। अमेरिका के भूतपूर्व प्रेजीडेण्ट केनड़ी के मित्र होकर उन्होंने अमेरिका की यात्रा की। रानी एलीजाबेथ के पर्सनल इन्वीटेशन पर वे महारानी एलीजाबेथ के मेहमान के रूप में उनके पास ठहरे। राजनैतिक आधार पर डिप्लोमेटिक वे में इस प्रकार की स्थिति में वे रहे। डिप्लोमेटिक स्थिति से दूर रहकर उन्होंने अपने सम्बन्ध इस प्रकार से अन्य राष्ट्रों से बनाये। यह इस बात का सबूत है कि उनका व्यवहारिक रूप में किस प्रकार का प्रेक्टिकल एप्रोच रहा है। महाराजा का जिस प्रकार का प्रेक्टिकल एप्रोच अन्य देशों के साथ रहा है उससे उन्होंने हिन्दुस्तान की गरिमा को बढ़ाया और अपने देश का सम्पर्क दूसरे देशों से बढ़ाया है। देश की सारी डिप्लोमेसी में उनका हमेशा योगदान रहा है जिसको हम भुलाकर नहीं चल सकते। ऐसी स्थिति में महाराजा जयपुर का देहावसान हम लोगों के लिये, हम सब के लिये एक भारी आघात था। लेकिन इस आघात को सहन करने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं था।

ऐसी स्थिति में मैं, महाराजा जयपुर के प्रति मेरी और मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

इसी प्रकार संसार में प्रेसीडेण्ट नासिर की मृत्यु से जिस प्रकार का झटका लगा

Page No 6

(श्री भैरोंसिंह)
वह भी आज की परिस्थिति में और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति जिस प्रकार की सीमा पर पहुंच चुकी है उस स्थिति में उनकी मृत्यु से भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कई प्रकार की उलझनें पैदा हो सकती हैं इस प्रकार का लोग अन्दाज लगाकर चलने लगे हैं।

प्रेसीडेण्ट नासिर ने एक सिपाही की हैसियत से उठकर राष्ट्रपति के पद को प्राप्त किया और आज अरब देशों में राष्ट्रपति नासिर को अपना मसीहा मानकर, अरबों को उन्नति के शिखर पर ले जाने वाला व्यक्ति मानकर जिस प्रकार उनके प्रति अपना आदर दिखाया जा रहा है वह किसी भी रूप में कम नहीं है।

उन्होंने स्वेज कैनाल के मामले में ब्रिटिश हुकूमत को धक्का देकर अपनी राष्ट्रीयता का परिचय दिया और खास तौर से वहां पर बान्ध बनाकर वह स्वयं अपना कन्ट्री सैल्फ सपोर्टेड बन जावे इस प्रकार की योजना को एग्जीक्यूट करने में भी कोई कसर नहीं उठा रक्खी।

जिस प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में नासिर ने राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया था और उस समय जो देश में परिस्थिति थी उसमें परिवर्तन लाने के लिये उन्होंने मृत्यु पर्यन्त प्रयत्न किया, आज उसी का यह परिणाम है कि दुनिया भर के झटके सहन करने की शक्ति आज यू. ए. आर. में पैदा हो गई।

मैं समझता हूं उनका यह असामयिक निधन संसार के सामने बहुत बड़ा झटका था और इसके लिये मैं और मेरा दल उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : अध्यक्ष महोदय, जब पहले पहल इस राजस्थान राज्य का निर्माण हुआ तो उस समय इसी विधान सभा के हाल के नजदीक ही सरदार पटेल उद्घाटन करने को पधारे थे। उस समय उन्होंने जब सबसे पहले जयपुर महाराजा की एक कुशल प्रशासक और देशभक्त होने के नाते प्रशंसा की उस समय मैं वहां मौजूद था और वह बात मुझे अभी तक याद है।

वाकई में यह बात सही है कि जयपुर के स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंह जी एक योग्य प्रशासक थे। और अपने राज्य में उन्होंने बहुत ही योग्य और उच्च कोटि के कुशल प्रशासकों को प्राइ मिनिस्टर मुकर्रर करके अपने जयपुर की और जयपुर रियासत की उन्नति के लिये अनेक काम किये।

जयपुर शहर की मिर्जा इस्माइल रोड इस बात की लगातार याद दिलाती रहती है हमको कि वह सभी साम्प्रदायिक झगड़ों से अलग रहकर योग्य प्रशासक जहां भी मिल सकता था उनको बुलाकर उनसे कार्य कराने का अवसर उनको प्रदान करता था।

एक बात और उल्लेखनीय है कि जब पाकिस्तान का निर्माण हुआ और जयपुर के निकट जो राज्य थे अलवर और भरतपुर जिनमें साम्प्रदायिक भावना भड़क उठी थी उस समय भी स्वर्गीय मानसिंह जी ने अपने यहां पर उस भावना को नहीं पनपने दिया और हिन्दू मुसलमान जो भी यहां रहते थे उन सबके साथ समान वर्ताव किया और किसी को उस साम्प्रदायिक भावना के निकट नहीं आने दिया। यहां पूरी तरह से

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

साम्प्रदायिक सद्भाव उस समय भी बना रहा। वह कुशल प्रशासक होने के साथ साथ गुण ग्राहक भी थे। सन् 54 में जब वे राजप्रमुख थे और मैं मिनिस्टर बना तो उन्होंने मुझे शपथ दिलाई। इसके बाद कई बार उनसे मिलने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। पिछली बार भी जब वे यहां थे तब भी उनके दर्शन किये। वे स्वभाव से सरल प्रकृति के थे और हमेशा हंसमुख रहते थे।

जब प्रजा तन्त्र की लहर देश में व्याप्त हुयी और देशी रियासतों में भी उत्तरदायी शासन की मांग पैदा हुई तो उन्होंने भी अपने राज्य में सन् 45 में उत्तरदायी शासन प्रारम्भ किया और इसके बाद नये राजस्थान का निर्माण हुआ तो उन्होंने सबसे पहले अपने राज्य को उसमें समर्पण किया।

कुशल प्रशासक और गुण ग्राहक के साथ वे पक्के देशभक्त भी थे। जब राज्यों के विलय का अवसर आया तो अपने राज्य, से किंचित् भी मोह न रख कर अपने पूर्वजों के राज्य को, अपनी राज्य सत्ता को, इस तरह से छोड़ दिया जिस तरह से राजा भर्तृहरि ने अपने राज्य को छोड़कर तपस्या ग्रहण करली थी। अपनी राज्य सत्ता छोड़कर वे स्पोर्ट्स के क्षेत्र में लग गये। उन्होंने पोलो के खिलाड़ी के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। जयपुर के एक भूतपूर्व महाराजा जयसिंह जी ने भी वर्ल्ड कम्पीटीशन में पोलो का कप जीता था। वे भी अपने समय के एक बहुत ऊंची कोटि के खिलाड़ी थे। पर जहां तक खिलाड़ी होने के साथ साथ योग्य प्रशासक और गुणग्राही होने का प्रश्न आता है मानसिंह जी उनसे भी आगे थे।

हम सब लोगों को जयपुर के स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंह जी के इस असामयिक निधन से हार्दिक दुख हुआ है। मैं अपनी और अपने दल की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और सर्व शक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

इजिप्ट के राष्ट्रपति नासिर एक बार हिन्दुस्तान की यात्रा पर आये थे। वे राजस्थान में भी आये। उस समय अलवर के नजदीक एक गांव में मुझे उनका स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ था। उस समय मैं मिनिस्टर था और हमारे अलवर से दस मील दूर ही एक कम्यूनिटी डवलपमेन्ट प्रोजेक्ट के गांव को, जिसकी काफी प्रशंसा हुई थी, देखने के लिये वे भी आये। वे हमारे देश के बहुत बड़े प्रेमी और प्रशंसक रहे हैं। वे हमारे दिवंगत नेता, पं. जवाहरलाल जी नेहरू के बहुत निकट के मित्र थे और हिन्दुस्तान से बहुत प्रेम रखते थे। मैं समझता हूं कि ऐसे हमारे देश के मित्र होने के नाते और योग्य प्रशासक होने के नाते वे हमारे सबके श्रद्धांजलि के पात्र हैं और उनको भी मैं अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री आदित्येन्द्र (डीग): माननीय अध्यक्ष महोदय, सन् 1970 के वर्ष में संसार की दो महान विभूतियां हमारे बीच से उठ गई। हमारे देश के और

(श्री आदित्येन्द्र)

हमारे राजस्थान के ही महाराजा मानसिंह आज हमारे बीच में नहीं रहे।

स्वर्गीय महाराजा मानसिंहजी सन् 1947 से पहले ही एक योग्य और उदार प्रशासक के रूप में रहे और उन्होंने काफी ख्याति प्राप्त की। सन् 1947 के बाद भी उन्होंने जो भी भूतपूर्व राजा थे, उनमें सबसे ज्यादा नहीं तो कम से कम दो तीन ऐसे राजा हुए जिसमें उनका नाम था।

उन्होंने स्वेच्छा से हिन्दुस्तान की आजादी के बाद हिन्दुस्तान की जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति की और उन्होंने अपने राज्य को हिन्दुस्तान में विलीन कर दिया।

इसके बाद वे यहां के राजप्रमुख भी रहे और जिन दिनों में वे राजप्रमुख रहे उन दिनों में भी जो हमारी यहां राजस्थान सरकार थी, उसके साथ उन्होंने पूर्ण सहयोग किया। किन्हीं को भी उनके बारे में कोई शिकायत का कभी अवसर नहीं आया बड़ी अच्छी तरह से वे हरेक गरीब से गरीब आदमी से, ऐसे आदमी से भी कि जिनका कोई भी सहायक न हो, वे बड़े तपाक से मिलते थे। हरेक आदमी की वे मदद भी करते थे और राजनीति में भी अन्त तक यही उनकी भावना रही कि मैं किसी पार्टी विशेष में न जाऊं और गरीबों का भला करूं। उन्होंने उस इच्छा को हमेशा निभाया और जो कुछ भी उन्होंने बात कहीं वे कभी भी इस प्रकार की नहीं कहीं कि जिससे दूसरों के लिये या दूसरी पार्टी के लिये कोई यह समझे कि उन पर कोई गलत आरोप लगा रहे हैं। हमेशा उन्होंने यही चाहा कि प्रशासन में पवित्रता और स्वच्छता आवे और इस बात के लिये उन्होंने हमेशा प्रयत्न भी किया। उनकी मृत्यु से जो कि असामयिक व आकस्मिक थी उससे हर एक को ही दुख होगा। यहां तक कि उनके विरोधी यद्यपि मैंने कोई सुने नहीं लेकिन फिर भी एक दो आदमी ऐसे भी हैं कि जो उनके बारे में बहुत अच्छी राय नहीं रखते हों लेकिन उन्होंने भी उनकी मृत्यु के बाद बड़ा भारी दुख प्रकट किया। तमाम राजस्थान के निवासियों के लिए ही नहीं बल्कि भारत के लोगों के लिए भी एक बड़ा भारी दुख है और जो कुछ भी नुकसान हुआ है उस नुकसान की पूर्ति होना सम्भव नहीं है। मैं अपने दल और मैं स्वयं अपनी ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता हूं। ईश्वर उनकी आत्मा के लिए शांति प्रदान करें।

इसी प्रकार हमारे देश के एक और महान व्यक्ति की मृत्यु हुई और वह थे जनरल नासिर। वह मिश्र के राष्ट्रपति थे और हमारे साथ उनके बड़े अच्छे सम्बन्ध थे प्रारम्भ से ही उनकी बड़ी सहानुभूति हमारे देश के प्रति रही और हमारे देश की जनता के प्रति रही। वह हमेशा यह चाहते थे कि हमारे देशवासी सुखी रहे और समृद्धिशाली बनें और उन्होंने अन्त तक वह बात निभाई। जिस समय हमारे देश के सर्वमान्य नेता हमारे प्रधान मंत्री जिन्दा थे वह अक्सर नासिर के बारे में बातचीत करते रहते थे और नासिर से उन्हें एक छोटे भाई की तरह ही नहीं बल्कि अपने एक लड़के की तरह से प्रेम था। जब चाहते वह उनसे बातें कर लेते जब चाहते उनसे सलाह मशविरा करते, उनको भी बुलाया

Page No 9

(श्री आदित्येन्द्र)

लेते या स्वयं चले जाते और इसके लिए उन्होंने कभी भी संकोच नहीं किया। जो हमारे देश के महान नेता पंडित जवाहरलाल जी नेहरू के द्वारा प्रतिपादित पंचशील के सिद्धान्त थे उनमें उनका बड़ा भारी योगदान था। उन्होंने हमेशा उस बात को एशिया में ही नहीं बल्कि तमाम दुनियां में फैलाया और एशिया का सर भी उन्होंने ऊंचा किया, तमाम संसार में। उनके प्रति भी मैं अपने दल और अपनी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, जब भारत के लोह पुरूष सरदार पटेल ने कुशल माला की तरह 600 बिखरे हुए फूलों को पिरोना शुरू किया तो जयपुर राज्य का खुशबूदार फूल भी भारत माता की चरणों में जयपुर के महाराजा ने समर्पित कर दिया और उसी प्रकार समर्पित कर दिया जिस प्रकार एक खिलाड़ी भेंट करता है। वैसे जयपुर के महाराजा का निधन सारे राजस्थान के लिए अत्यन्त झटके वाली बात है लेकिन उन्होंने जिस प्रकार राज्य को समर्पित किया उससे लगता है कि उन्होंने कितना बड़ा काम किया था और हम आजादी के 22 साल बाद यह देख चुके हैं कि प्राणों से भी सत्ता का मोह अधिक होता है लेकिन उन्होंने एक खिलाड़ी की भांति समर्पित कर दिया। उनकी मौत जहां हमारे लिये बहुत कष्ट की बात है वहां उनकी मौत से किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है जब कोई योद्धा युद्ध के मैदान में मरता है, कोई भक्त भक्ति करते हुए मरता है और कोई खिलाड़ी पूरे देश का मस्तक ऊंचा करते हुये खेल के मैदान में मरता है तो इससे बढ़कर मौत हो नहीं सकती। जब वह गये तब शवयात्रा में लाखों आदमी आंसू निकाल रहे थे और वह हंसते हुए गये इससे बढ़कर कौन मौत हो सकती है इसलिए मैं तो यही कह सकता हूं कि भगवान उनके परिवार को वह ताकत दे कि जिस प्रकार उन्होंने अपना नाम कमाया, सारे संसार में यश कमाया उसी तरह से उनका परिवार भी, जैसे उन्होंने राज्य छोड़ा उसी तरह से उनका परिवार भी, दीन दुखियों और असहाय व्यक्तियों के लिए धन छोड़ कर सवाई नाम को डेढा नाम कर दे, और महारानी साहिबा राजमाता के रूप में जयपुर की राजमाता न होकर पूरे प्रान्त की राजमाता का स्थान ले ले यही मेरी भगवान से प्रार्थना है।

जनरल नासिर को कौन नहीं जानता। जिस दिन उनकी मौत हुई हमने चाहे देखा या न देखा लेकिन सब को ऐसा झटका लगा जैसे हमारा कोई अपना साथी उठ गया हो। वह गुट निरपेक्षता के प्रतीक थे और हमारे पण्डित जी के अनन्य साथी थे। उन्होंने अरब राज्य को गौरवान्वित किया और जिस समय उनकी शवयात्रा निकली तो उसमें ही पचासों आदमी मर गए और लाखों ने इतने जोर से आंसू बहाये तो इससे बढ़कर क्या मौत हो सकती है। मैं उनको भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (उपाध्यक्ष) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय महाराजा साहब जयपुर के निधन से हमने एक बहुत ही शानदार व्यक्ति को खो दिया है। उनका व्यक्तित्व चौमुखी था, वे अच्छे प्रशासक थे,

(श्री पूनमचन्द विश्नोई)
अच्छे खिलाड़ी, अच्छे राजनीतिज्ञ और बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। आज के शासन का जिसका आधार जनतांत्रिक और जन कल्याण है उससे तो उनका मुकाबला नहीं कर सकते लेकिन अपने माने में उनका शासन काफी प्रगतिशील था। जैसा कि मेरे से पूर्व व्यक्तियों ने कहा श्री कृष्णमाचारी और श्री मिर्जा ईस्माइल आदि बहुत ही योग्य व्यक्तियों को उन्होंने प्रशासक नियुक्त किये और जयपुर राज्य के अन्दर कई सुधार के काम जो दूसरे रजवाड़ों में नहीं हुए थे वह उनके राज्य में हुए। खेल के क्षेत्र में उनका एक विशिष्ट स्थान था और वह सच्चे खिलाड़ी थे, यह इसी से साबित होता है कि उनकी मृत्यु भी खेलते घोड़े की पीठ पर हुई। वे उच्च कोटि के प्रशासक थे और ऐसे व्यक्ति थे जो चाहे किसी भी मण्डली में हों, हमेशा राजा दीखते थे। उनका देश व विदेशों में राजनीतिज्ञों से, राजघरानों से और उच्च वर्ग के कई लोगों से घनिष्ट सम्बन्ध थे जिनके बारे में कहा गया है। वे सही मायने में, जयपुर रजवाड़े की उत्तर भारत में जो शानदार परम्परा रही है, उसके प्रतीक थे। जयपुर के बारे में कुछ भी कहा जाय लेकिन एक बात को हम नजरअन्दाज नहीं कर सकते कि उत्तर भारत में जयपुर राज्य ही एक ऐसा राज्य था जिसने हमेशा केन्द्र को मजबूत करने की नीति अपनाई है। आज से 10-12 साल पहले जब मैं जयपुर हिजहाईनेस से मिला, एक दफा खेल के सम्बन्ध में, उस समय उनका विचार राजनीति में आने का था। उन्होंने कहा कि मेरा पहला कर्त्तव्य अपने देश के प्रति है और दूसरा कर्त्तव्य जो मेरे पहले की जनता है उसके प्रति है। इन दोनों कामों के अलावा और खेल के अलावा और तीसरा काम नहीं था।

जयपुर के राजघराने के बारे में हम जब कहते हैं तो कई तरह के खयाल आते हैं, लेकिन कुछ बातों के लिए उनकी हमेशा सराहना की गई है कि उत्तर भारत को जयपुर ने जैसा कुशल प्रशासक दिया है वैसा किसी दूसरे रजवाड़े ने नहीं दिया। धर्म निरपेक्षता, केन्द्र को मजबूत करने की बात, साहित्य, संगीत, नृत्य, ज्योतिष और अलग अलग भाषाएं चाहे उर्दू हो, चाहे फारसी हो, चाहे हिन्दी हो, चाहे संस्कृत हो इनको आश्रय जितना जयपुर के रजवाड़े से मिला है उतना अन्य किसी रजवाड़े से कभी भी नहीं मिला। अगर जयपुर के राजघराने ने दिल्ली की सल्तनत के साथ सुलह करके कोई स्थान प्राप्त किया तो मैं कह सकता हूं कि अपनी दृढ़ता तथा अपनी योग्यता के आधार पर प्राप्त किया है। जहां कहीं भी काम किया है, चाहे सेनापति के रूप में हो, चाहे प्रशासक के रूप में हो उन्होंने अपनी एक निश्चित छाप छोड़ी है, और जयपुर दरबार उसी परम्परा के मानने वाले और उसके एक सच्चे प्रतीक थे।

मैं अपनी ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

राष्ट्रपति नासिर हमारे देश के बहुत बड़े मित्र थे और दुनिया के दबे हुए लोगों के बहुत बड़े हितैषी थे। उनके निधन से भारत को और दुनिया के दबे हुए लोगों

(श्री पूनमचन्द विश्नोई)

को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है अरब क्षेत्र के दबे हुए लोगों का जिस तरह का अभी संघर्ष चला आ रहा है और इसी तरह से अफ्रीका के अन्दर जो उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष चल रहा है उसके सच्चे नेता नासिर थे। इन कठिन परिस्थितियों में उनका उन लोगों के बीच में से उठ जाना मैं समझता हूं एक बहुत बड़ी क्षति है जिसको और कोई नेता मुश्किल से ही पूरी कर सकेगा। मैं अपनी ओर से उनको भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार (हवामहल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, एकं क्षण। माननीय अध्यक्ष जी, जीवन और मरण के सम्बन्ध में दार्शनिक दृष्टिकोण "जातस्यहि ध्रुवो मृत्युं ध्रुवं जन्म मृतस्यंच" 'गीता' चाहे कुछ भी हो किन्तु संसार के रंगमंच पर व्यक्ति विशेष अपने कार्यकलापों की जो अमिट छाप छोड़ कर जाता है वही उसकी नश्वरता को अमरत्व प्रदान करती है। रियासत के जमाने का नागरिक होने के नाते मुझे इस बात का अच्छी तरह अनुभव है कि इस देश में इस प्रकार की मान्यता सदैव से चली आ रही है कि राजा ईश्वर का अवतार होता है राजा की वाणी देश का कानून होती है, देश की सारी संपत्ति पर राजा का अधिकार होता है। इस मान्यता के होते हुए भी मैं निश्चयात्मक रूप से अपने अनुभव के आधार पर यह निवेदन करना चाहुंगा कि स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंहजी ने अपने आपको कभी राजा स्वीकार नहीं किया जब कभी प्रजा के सामने बात करने की कोई बात आती, तो उन्होंने अपने शब्दों में यही कहा कि हमारे राज्य का राजा तो गोविन्द देवजी हैं। हम तो यहां के दीवान हैं, और इसी मान्यता के आधार पर, अध्यक्ष महोदय, आप कल्पना कीजिये कि जब रियासत की सारी सम्पति राजा की व्यक्तिगत सम्पत्ति हो सकती थी उन्होंने अपनी सारी व्यक्तिगत सम्पत्ति का प्रजा के हित के लिए, शिक्षा के क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में और अन्य क्षेत्रों में उदारता के साथ सदुपयोग किया।

उनके प्रति श्रद्धान्जलि में बहुत सी बातें कहीं। यह भी कहा गया कि केन्द्र के साथ इस राज्य का परम्परा से किसी प्रकार मेल रखने का व्यवहार रहा है, यह एक नीति विषयक बात हो सकती है। इसके विषय में मैं कोई चर्चा नहीं करना चाहता। व्यक्ति विशेष में क्या गुण होते हैं उसके लिए मैं केवल दो ही कविता के शब्द आपके सामने उपस्थित करता हूं—

मान पालिया मान ने
मान या कि मत मान
अब दुर्लभ ही मानिये
मिलना ऐसा मान।

तो इन श्रद्धान्जलि के शब्दों के साथ मैं, अध्यक्ष महोदय, यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि जनरल नासिर अरब जैसा राज्य जो किसी समय पिछड़ा राज्य माना जाता था उसमें जन-जागृति उत्पन्न करने वाले व्यक्ति, भारतीय राजनैतिक विचार धारा से अपनी विचारधाराओं का सामन्जस्य रखने वाले व्यक्ति, विश्व में राजनीति में क्रान्ति उत्पन्न करने वाले व्यक्ति थे। उनका निधन भी हमारे देश के लिए ही नहीं विश्व के लिए एक बहुत बड़ी और बहुत बुरी बात है। उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धान्जलि समर्पित करता हूं

श्री अध्यक्ष : स्वर्गीय महाराजा मानसिंहजी भूतपूर्व राजप्रमुख,, राजस्थान के निधन पर जो माननीय सदस्यों ने विषाद व्यक्त किया है उनकी इन संतप्त भावनाओं में मैं, अपने व्यथित उद्‌गार समाहित करता हूं।

हमारे राज्य के भूतपूर्व राज-प्रमुख एवं जयपुर राज्य के भूतपूर्व नरेश महाराजा सवाई मानसिंहजी के आकस्मिक एवं असामयिक दुखद निधन से राजस्थान के जन-मानस को जबरदस्त आघात पहुंचा है। उनके निधन से राजस्थान ने एक कुशल प्रशासक, साहस एवं शौर्य के प्रतीक एक वीर सैनिक, अद्वितीय खिलाड़ी, चतुर राजनायक तथा एक सच्चे देशभक्त को खो दिया है।

महाराजा मानसिंह का शासन काल राजस्थान के तत्कालीन रियासती शासकों के इतिहास में एक उज्जवल पृष्ठ है। कार्यपालिका से न्यायपालिका का पृथक्-करण तथा लोक सेवा आयोग एवं राजस्व मंडल की स्थापना उनके शासनकाल की प्रगतिशील प्रमुख उपलब्धियां थीं।

एकतन्त्रीय प्रशासन के ढांचे में परिवर्तन लाने के लिए उद्वेलित-जन मानस की विचारधाराओं और धारणाओं को स्वर्गीय महाराजा सवाई मानसिंह की दूरदर्शी एवं कुशाग्र बुद्धि ने पहले से ही समझ लिया था। अतः उन्होंने अपने राजतन्त्र को उसी तरह नया रूप देना आरम्भ कर दिया कि जिस तरह से एक कुशल शिल्पी किसी प्राचीन प्रस्तर-प्रतिमा को नये भाव, नई आकृति और नया सौन्दर्य देते हुए उसकी प्राचीनता का वैभव भी अक्षुण्ण रख लेता है।

विद्यार्थी जीवन से लेकर अपने अंतिम क्षण तक स्वर्गीय महाराजा साहब अद्वितीय खिलाड़ी रहे एवं संसार के सर्व श्रेष्ठ पोलो के खिलाड़ियों में गिने गये। जीवन को उन्होंने एक खिलाड़ी की तरह जीना सीखा।

सन् 1945 में राजस्थान विधान सभा के इसी भवन में उन्होंने जयपुर राज्य की धारा सभा (लेजिस्लेटिव कौन्सिल) और जयपुर प्रतिनिधि सभा (स्टेट कौन्सिल) का उद्‌घाटन किया था और फिर 1952 में राजप्रमुख के रूप में राजस्थान विधान सभा का उद्‌घाटन भी उन्होंने इस भव्य भवन के प्रांगण पर हर्षोल्लास के वातावरण में किया था। अतः हमारे इस भवन के साथ उनकी चिर स्मृति जुड़ी हुई है। सन् 1949 में जब जयपुर राज्य राजस्थान में विलीन हुआ तब एक प्रसिद्ध जर्नलिस्ट जान गुन्थर ने उनके लिए कहा था "संसार के सर्वोत्कृष्ट पोलो खेलने वाले सवाई मानसिंह ने इतने बड़े परिवतन को उसी सरलता से अपना लिया जैसे वे पोलो में अपने घोड़े बदलते थे।"

राजस्थान के निर्माण एवं उसके एकीकरण में उनका योगदान एवं सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण था। राजप्रमुख के रूप में उनकी राजस्थान की सेवाएं भुलाई नहीं जा सकती।

सन् 1962 में चीन और 1965 में पाकिस्तान के आक्रमण के समय उन्होंने अपने आपको देश-सेवा में लगा दिया। हमारी सेनाओं के लिए राजस्थान के वीर सपूतों का आह्वान करने का उत्तरदायित्व उन्हें सौंपा गया और इस पुनीत

(श्री अध्यक्ष)

कर्त्तव्य को उन्होंने एक वीर सैनिक की तरह पूरा किया। स्वर्गीय महाराजा साहब को भारतीय सेना में लेफ्टिनेन्ट जनरल का पद प्राप्त था और इस पद के अनुरूप ही उन्होंने शत्रुओं के विरुद्ध देश की रक्षा में महान योगदान दिया वे हमारे राष्ट्र के कर्त्तव्यनिष्ट और निष्ठावान सैनिक थे-जो राजनीति के दांवपेचों से सदा दूर रहे। सन् 1962 में वे राज्य सभा के सदस्य चुने गये। तीन वर्ष बाद वे स्पेन में भारत के राजदूत नियुक्त हुए। 27 जून, 1970 को जयपुर एवं राजस्थान की शोकाकुल जनता ने अपने प्रिय महाराजा मानसिह को पूर्ण राजकीय सैनिक सम्मान के साथ अन्तिम विदा दी। माननीय सदस्यों की भावनाओं के साथ में भूतपूर्व राजप्रमुख महाराजा सवाई मानसिह द्वितीय को वेदना और श्रद्धा से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

इसी प्रकार राष्ट्रपति नासिर के निधन से अरब जगत ने एक महान नेता एवं भारत ने एक सच्चा मित्र खो दिया है। जनरल नासिर ने अपने देश में शाही शासन को समाप्त कर लोकतन्त्री शासन की स्थापना की तथा स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर देश को साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त कराया।

गुट निरपेक्ष राष्ट्रों के वे एक प्रमुख नेता थे तथा वे पं. नेहरु व मार्शल टीटो के साथ गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त को विश्व में प्रमुखता दिलाने में अग्रणी रहे।

अरब जगत को एक सूत्र में बांधने के लिए वे जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहे। और अन्त में जोर्डन के गृह युद्ध को कौशल से समाप्त कराने के पश्चात् उनका देहान्त हो गया।

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वे दो मिनट मौन खड़े होकर दोनों दिवंगत आत्माओं की परम शान्ति के लिए प्रार्थना करें।

(सदन ने दो मिनट मौन खड़े होकर स्व. भूतपूर्व राजप्रमुख महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय एवं अरब गण राज्य के स्व. राष्ट्रपति नासिर को श्रद्धांजलि अर्पित की)

श्री अध्यक्ष : मैं सदन की कार्यवाही कल प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित करता हूं।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 12-22 म. प. कल दिनांक 3 नवम्बर, 1970 के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

शुद्धि-पत्र

सोमवार, दिनांक 2 नवम्बर, 1970

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
3	11	पालो	पोलो
5	6	दुघटना	दुर्घटना
10	अन्तिम से 12	ऐसा	ऐसी
12	15	प्राइ	प्राइम
16	अन्तिम से 1	बुलावा	बुलवा
17	4	पचशील	पंचशील
17	14	माला	माली
22	1	ता	तो
22	1	देवज	देवजी
23	अन्तिम से 2	वभव	वैभव
23	,, 8	दूरदशी	दूरदर्शी
24	,, 4	सवा	सेवा
24	,, 14	परिवतन	परिवर्तन
26	,, 6	कार्यकाही	कार्यवाही
